ISSN: 2583-5149 | Vol. 3, Issue. 1 | 2023 June | Frequency: Biannual

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
www.ijiis-org.com

गढ़वाल हिमालय से प्राप्त दुर्लभ स्थानक सूर्य प्रतिमा : एक प्रतिमा वैज्ञानिक अध्ययन

अभिनव तिवारी

Received: 18 June 2023 | Accepted: 20 June 2023 | Published: 30 June 2023

शोध सार :– कला का सम्बन्ध धर्म से रहा है, जिसमें धर्मिक भावनाओं एवं आस्थाओं की मूर्त अभिव्यक्ति हईु है। गढ़वाल प्राचीन काल से ही सम्पूर्ण भारत वर्ष में कला एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। इसके प्रमाण गढ़वाल के विभिन्न क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होता है। गढ़वाल बहुमूल्य धरोहरों से समृद्ध है किन्तु जनमानस में ज्ञान, संरक्षण एवं उपयोगिता के अभाव में हमारी प्राचीन एवं ऐतिहासिक धरोहरें नष्ट होने के कगार पर हैं। इस तरह सूर्य प्रतिमाओं का निर्माण भी गढ़वाल में हुआ है। शोधार्थी द्वारा शोध सर्वेक्षण कार्य के दौरान विवेच्य प्रतिमा संज्ञान में आया जो ज्ञान, संरक्षण एवं उपयोगिता के अभाव में नष्ट होने की अवस्था में पहुँच गया है किन्तु फिर भी गढ़वाल की एक दुर्लभ प्रतिमा है। प्रस्तुत शोधपत्र में गढ़वाल हिमालय में स्थित देवल गाँव की उमा–महेश्वर प्रतिमा का प्रतिमा शास्त्रीय विश्लेषण किया गया है।

प्रमुख शब्द : गढ़वाल, रुद्रप्रयाग, बसु–केदार, देवल गाँव मंदिर समूह, सूर्य प्रतिमा, स्थानक मुद्रा।

भारत में प्राचीन काल से ही धार्मिक क्षेत्र में त्रिदेवों के अलावा सूर्य का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। सूर्य के उपासक/अनुयायी "सौर सम्प्रदाय" वाले कहलाते हैं। सूर्य को एक प्राकृतिक शक्तियों वाला देव भी कहा जाता है क्युकि वह प्रतिदिन उदित होकर अंधकार को दूर करता है। उसके प्रकाश से मनुष्य एवं प्रकृति को अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। उत्तराखण्ड में भी शैव, वैष्णव, शाक्त सम्प्रदायों की ही तरह सौर सम्प्रदाय का प्रचलन रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप सूर्य की अनेक प्रतिमाएं निर्मित हुई। कुछ प्रतिमाएं एकल मंदिर में मुख्य देवता के रूप में प्रतिष्ठापित हुई तो कुछ अन्य देवो के साथ सहायक देवता के रूप में देवालयों में प्रतिष्ठापित हुई। उत्तराखण्ड में बहुसंख्यक सूर्य प्रतिमाये और मंदिर वर्तमान में प्राप्त होते हैं।

उद्भव एवं विकास

भारत में सूर्य पूजा का आरम्भ कब से हुआ ?? यह एक अस्पष्ट सवाल है, जिसके विषय में स्पष्ट रूप से कहना कठिन है द्य नवपाषण कालीन संस्कृतियों में सूर्य पूजा के अस्तित्व का उल्लेख किया गया है।[1]

सिन्धु सभ्यता में ठीकरों पर मिले चिन्हों (जिनका स्वरुप देखने से सूर्य के गोल आकृति की तरह है) के आधार पर मानते हैं।

वैदिक काल में सूर्य का महत्व अत्यधिक था। पंखदार सूर्य की आकृति की परिकल्पना का ज्ञान ऋग्वैदिक काल से प्रचलित है। जो उस समय सूर्य पूजा के स्वरुप में प्रचलित है। वैदिक लोगों ने सूर्य से सम्बंधित अनेक देवताओं की कल्पना कर ली थी।[2] इनमे सविता, पूषन, मित्र, आर्यमान और विष्णु प्रमुख है।[3] उत्तर वैदिक काल में तो सूर्य पूजा के आध्यात्मिक तत्वों के अतिरिक्त कर्मकाण्डों और धार्मिक विधि–विधानों की विस्तृत चर्चाएँ होने लगती है। साथ ही सूर्य पूजा की पुष्टि अनेक धार्मिक ग्रंथों में जिनमे ब्राह्मण ग्रंथों[4], संहिताओं[5], उपनिषदों[6], गुह्यसूत्रों[7], धर्मसूत्रों[8] से होती है। आहत सिक्कों तथा जनपद और गणराज्यों के सिक्कों पर भी सूर्य की चक्राकार आकृति मिली है। कुछ मुहरों पर भी 'भागवत एवं आदित्य' आदि का लेख मिलते हैं। जो सूर्य पूजा की व्यापकता एवं लोगों के आस्थावान का परिचायक है।

सूर्य की प्रतिमा का स्वरुप शुंग–कालीन बोधगया के वेदिका पर सर्वप्रथम प्राप्त होती है। उसके बाद कुषाण राजाओं के शासन काल में निर्मित होने लगी थी। सूर्य प्रतिमाएं दूसरी शती ई०पू० से ही बनने लगी थी, जो प्रथम शती के आस–पास व्यापक रूप में अवलोकित होती है,किन्तु सूर्य की मानवकृत स्वतंत्र प्रतिमाएं अभी तक नही बनती थी। साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है की "ईसा पूर्व की प्रथम–द्वितीय शताब्दी में दो सौर सम्प्रदाय था – पहला वैदिक देवता सूर्य का एवं दूसरा यूनानी देवता हेलिओस का।"

चूँकि यूनानी साहित्य एवं मुद्राओं पर हेलिओस नामक देवता की मानवकृत मूर्ति मिलती है। कनिष्क के सिक्कों पर भी मिहिर की मानव

कृत आकृति मिलती है। हेलिओस एवं मिहिर को ईरानी सूर्य देवता माना गया है।

इस तरह सूर्य की प्रतिमाएं दूसरी शती ई०पू० से बनने लगी किन्तु प्रथम शती के लगभग व्यापक रूप में प्रसार–प्रचार और अवलोकित होने लगती हैं।

इस तरह ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में सौर सम्प्रदाय का विकास एवं सूर्य प्रतिमाओं का निर्माण दोनों कुछ निश्चित प्रतिमांकनों के तहत होता गया।

सूर्य का प्रतिमा शास्त्रीय रूप

1. पारिवारिक
2. रथारूढ़

शोधार्थी ने सूर्य प्रतिमाओं को उनके रूप के आधार पर निम्न प्रकारों में विभक्त किया है।

1. स्थानक प्रतिमा
2. आसनस्थ प्रतिमा
3. रथारूढ़ प्रतिमा (स्थानक, आसनस्थ दोनों)
4. नवग्रहीय स्वरुप प्रतिमा

स्थानक प्रतिमा :– इस स्वरुप में सूर्य प्रतिमा खड़ी अवस्था में निर्मित होती है। स्थानक रूप की प्रतिमा भी दो तरह की होती है। एकल स्थानक सूर्य प्रतिमा और दूसरी परिवार स्थानक सूर्य प्रतिमा। एकल स्थानक प्रतिमा में सिर्फ सूर्य की उपस्थित और परिवार स्वरुप में सूर्य के अलावा उनके परिवार, अनुचरों इत्यादि का भी प्रदर्शन होता है।

आसनस्थ प्रतिमा :– इस स्वरुप में सूर्य की प्रतिमा पद्मपीठिका पर या किसी पीठिका पर बैठी हुई प्रदर्शित होती है। यह भी दो तरह की होती है। एकल आसनस्थ सूर्य प्रतिमा और दूसरी परिवार आसनस्थ सूर्य प्रतिमा। एकल

प्रतिमा में सिर्फ सूर्य की उपस्थित और परिवार स्वरुप में सूर्य के अलावा उनके परिवार, अनुचरों इत्यादि का भी प्रदर्शन होता है।

रथारूढ़ प्रतिमा (स्थानक एवं आसनस्थ) :– इस स्वरुप में सूर्य रथ पर सवार होते हैं और उनके रूप को देख कर ही नामकरण किया जाता है। जैसे रथ पर सवार सूर्य खड़े हैं तो 'रथारूढ़ स्थानक सूर्य प्रतिमा' और यदि रथ पर बैठे हुए हैं तो 'रथारूढ़ आसनस्थ सूर्य प्रतिमा' कहा जाता है। साथ में यदि रथारूढ़ सूर्य एकल निर्मित है तो 'रथारूढ़ एकल स्थानक/आसनस्थ सूर्य प्रतिमा' और यदि परिवार और अनुचरों के साथ निर्मित हैं तो 'रथारूढ़ परिवार स्थानकध्आसनस्थ प्रतिमा' कहा जाता है।

नवग्रहीय स्वरुप :– सूर्य के चारों तरफ नव ग्रहों की प्रतिक रूप में पूजा की जाती है घ जिनका केंद्र सूर्य ही होता है। इसमें सूर्य प्रतिक रूप में पूजे जाते है। सूर्य नवग्रह मण्डल के प्रमुख देव माने जाते हैं। नवग्रह पूजा वर्तमान में भी भारतीय समाज में दृश्यगत और प्रचलित है।

इस तरह से सूर्य प्रतिमाएं मौर्य काल से लेकर 13–14 वीं सदी तक निर्मित होती रही। किन्तु सूर्य का 'स्थानक स्वरुप' की प्रतिमा अखिल भारतीय स्तर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में सर्वाधिक लोकप्रिय था। उत्तराखण्ड में भी सूर्य की 'स्थानक स्वरुप' की पर्याप्त मात्रा में निर्मित हुई हैं। जो सूर्य पूजा के प्रभाव एवं सौर संप्रदाय के महत्व को प्रदर्शित करता है। उत्तराखंड में सूर्य की यह प्रतिमा किसी मंदिर में एकल देवता के रूप में या अन्य मंदिरों में अन्य देवताओं के साथ पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती है।

भारतीय शास्त्रीय परम्परा में सूर्य की स्थानक मुद्रा की प्रतिमा सभी कालों में लोकप्रिय रही है। इस स्वरूप में सूर्य को दोहरे कमलासन पर खड़ा प्रदर्शित किया जाता है। उनके सिर पर किरीटमुकुट तथा गले में वनमाला एवं कमर में कमरबन्ध आदि आभूषण धारण किये हुए प्रदर्शित होते हैं। इनके साथ इसके अनुचर दंडी, पिंगला, उषा, प्रत्युषा आदि भी इसके अगल–बगल उसी शिलापट्ट पर अंकित हैं। कभी–कभी उसी पट्ट पर दो नारियों का भी अंकन होता है, जो हाथ में धनुष–बाण धारण किये उसको छोड़ने की मुद्रा में दिखती है। उनकी यह क्रिया संभवतः अंधकार के विनास करने की स्थिति का बोधक है।

विवेच्य प्रतिमा उत्तराखण्ड राज्य के रुद्रप्रयाग जनपद, (जो मन्दाकिनी एवं अलकनंदा नदियों का संगम है) के जिला मुख्यालय से लगभग 40 किमी० दूर बसु–केदार क्षेत्र के वीरों–देवल नामक जगह के देवल ($30^0$26′51 एवं $79^0$3′55) नामक ग्राम में समुद्रतल से 1240 मीटर ऊँचाई पर स्थित है।

देवल गाँव से प्राप्त सूर्य की यह प्रतिमा, प्रतिमा शास्त्रीय ग्रंथों में प्राप्त विवरणों के अनुसार सूर्य के 'मानव रूप प्रतिमा' के अंर्तगत 'स्थानक मुद्रा' की प्रदर्शित है।

विवेच्य सूर्य प्रतिमा (च्संजम–01) 48′30′11 सेमी० के गहरे काले–स्लेटी प्रस्तर से निर्मित है। इस प्रतिमा सूर्य मानव रूप में पुरे परिवार एवं अनुचरों के साथ स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित हैं।

विवेच्य प्रतिमा में प्रतिमा शास्त्रीय विशेषताओं/लक्षणों में उदीच्य वेशी सूर्य को अलंकृत वृत्ताकार आभामण्डल युक्त चतुर्भुजी एवं द्विस्तरीय (दुहरे) पद्मपीठ पर आसीन पीठिका पर स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। सूर्य के पृष्ठ दोनों हाथों में विकसित सनाल कमलपुष्प है, जो कंधे तक उठे हुए प्रदर्शित हैं। वर्तमान में दोनों अग्र हस्त खंडित अवस्था में प्रदर्शित हो रहा है।

विवेचित सूर्य प्रतिमा के प्रतिमा शास्त्रीय विशेषताओं/लक्षणों का अत्यंत सजीव अवलोकन होता है। जिसमे सूर्य को चौड़ा किरीट–मुकुट, गले में हार, एकावली(ग्रैवेयक), कौस्तुभमणी, कानो में कुण्डल, छाती पर कवच, दो वनमाला – जिनमे एक माला उदर तक और दूसरी माला कटि (कमर) तक लटक रही है, यज्ञोपवीत, एवं सूर्य के कन्धों पर एक दुपट्टा भी पड़ा प्रदर्शित हो रहा है। कमर में धोती एवं मेखला/कमरबन्ध या एक पट्टी भी बंधी हुई है,

जिसके दोनों अलंकृत डोर (जंजीर) दोनों जांघों पर लटक रही है। पैरों में लम्बा उपानह (बूट) धारण किये हुए प्रदर्शित है।

द्विस्तरीय पद्मपीठिका पर आसीन सूर्य प्रतिमा के शीर्ष भाग (उर्ध्वपार्श्व) पर दोनों तरफ दो मालाधारी विद्याधर अपने–अपने हाथों में माला धारण किये उड़ान भरने की अवस्था में प्रदर्शित हो रहे है। प्रतिमा के मध्यवर्ती भाग (उभयपार्श्व) में गज–शार्दुल तथा सिंहव्याल का अंकन भी है। प्रतिमा के निचले भाग (अधोभाग) के दक्षिणपार्श्व में पिंगल एवं वामपार्श्व में दण्डधारी दंडी का प्रदर्शन है। 'सूर्य के पैरों के मध्य में एक देवी को प्रदर्शित किया गया है। जिन्हें भू–देवी–महाश्वेता कहते है[9], जो समपाद मुद्रा में स्थानक खड़ी प्रदर्शित हैं, उनका दक्षिण हस्त अभी मुद्रा एवं वाम हस्त जानू पर अवलंबित है।' भट्टशाली महोदय[10] ने बंगाल से प्राप्त सूर्य प्रतिमाओं उत्कीर्ण इस देवी का तादात्म्य सूर्य की एक पत्नी उषा से किया है। किन्तु आर०पी० चंद्रा[11], एम० गांगुली[12], जे०एन० बैनर्जी[13] ने इस देवी का तादात्म्य सूर्य की एक पत्नी भू–देवी महाश्वेता से ही किया है इसका प्रमाण भविष्य पुराण में इस देवी को महाश्वेता ही बतलाया गया है।[14] सूर्य प्रतिमा के निचले भाग के बाहरी दोनों किनारों (अधोपार्श्व) में दो–दो स्त्रियाँ त्रिभंग मुद्रा में खड़ी प्रदर्शित हैं। दाहिने से प्रथम स्त्री का दायाँ हाथ उदर पर स्थित है जिसका आयुध खंडित है। संभवतः इसमें चवर रहा होगा, बाएं हाथ में पद्म है। दाहिने से दूसरी स्त्री के सिर के केश (बाल) जटाजूट की आकृति में पीछे की तरफ बंधे हुए एवं इसके हाथों में उपस्थित आयुध स्पष्ट नही प्रदर्शित हो रहे है। इसी तरह बाये तरफ से प्रथम स्त्री के हाथों में उपस्थित आयुध स्पष्ट नही पा रहे हैं। बाएं से दूसरी स्त्री अपने दोनों हाथो से खड्ग पकड़े हुए प्रदर्शित है। संभवतः यह चारों स्त्रियाँ सूर्य की चारों पत्नियों (उषा, प्रत्युषा, रजनी, निक्षुभा) का ही अंकन है। चरण पीठिका पर दोनों ओर एक–एक उपासकों का अंजलिबद्ध मुद्रा में प्रदर्शन है।

इस प्रकार की प्रतिमा का विवरण शास्त्रीय ग्रंथों वृहतसंहिता, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, मत्स्य पुराण, अग्नि पुराण, भविष्य पुराण, एवं दक्षिण भारतीय ग्रंथों (अंशुमदभेदागम और सुप्रभेदागम) इत्यादि से प्राप्त होता है।

वृहत्संहिता के अनुसार, सूर्य का पूरा शरीर वक्षस्थल से लेकर पैर तक ढका रहता है। वे सर पर मुकुट एवं हाथों में कमलपुष्प के डंठल को पकड़े रहते हैं। उनके कानों में कुंडल तथा गले में हार रहता है। कमर में अव्यंग तथा उनका मुख एक आवरण से ढका रहता है। यह ग्रन्थ सूर्य के रथ, उसमें जुटे हुए अश्व और उनके परिचारकों का उल्लेख नही करता है।[15]

विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार, सूर्य को चतुर्भुज और मुछे चमकती हुई, चेहरा अत्यंत सुंदर, वर्ण सिंदूरी लाल होना चाहिए। उनके पास उनके सभी पुत्र, पत्नियाँ, सारथी अरुण एवं सभी अनुचरों का प्रदर्शन होना चाहिए।[16]

विश्वकर्मा शिल्प के अनुसार, सूर्य को एक चक्र वाला रथ सात अश्वों से जुता हो, सूर्य अपने दोनों हाथों में कमलपुष्प लिए हो, वक्ष पर कंचुक और वर्ग धारण किये एवं सभी आभूषणों से अलंकृत हों, साथ में पिंगल, शंख धारी, दण्ड, स्कन्द और खड्गधारी द्वारपाल का प्रदर्शन होना चाहिए।[17]

मत्स्य पुराण के अनुसार, सूर्य एक चक्र वाले, सात अश्वों से जुटे हुए रथ पर आरूढ़ सूर्य का वर्णन किया गया है। दोनों हाथों में कमलपुष्प कंधे तक उठाये हुए एवं समस्त आभूषणों से युक्त हो। तेज से आवृत्त उनके दोनों पैर वस्त्रों से ढके हों, उनके पार्श्व में खड्ग लिए दंडी और पिंगल तथा लेखनी लिए धाता(ब्रह्मा) स्थित हों।[18]

अग्नि पुराण के अनुसार, सूर्य एक चक्र वाले और सात अश्वों वाले रथ पर आरूढ़ एवं दोनों हाथों में कमलपुष्प धारण किये हुए, उनके दाहिनी ओर मसिपत्र एवं लेखनी लिए हुए कुण्डी और बायीं ओर दण्ड लिए पिंगल हो, साथ ही राज्ञी और निक्षुभा को भी उनके पार्श्व में प्रदर्शित किया जाये।[19]

भविष्य पूरण के अनुसार, इसमें सूर्य को एक या सात अश्वों वाले रथ पर आरूढ़ एवं समस्त आभूषणों से युक्त एवं परिचारकों के साथ प्रदर्शित किये जाने का वर्णन है।[20]

दक्षिण भारतीय ग्रंथों (अंशुमदभेदागम एवं सुप्रभेदागम) के अनुसार, सूर्य को द्विभुजी दिखाना चाहिए, जिसमे कमलपुष्प धारण किये, जो कंधे तक उठे होने चाहिए। उन्हें पद्मपीठ पर आसीन अथवा सात अश्वों से जुटे रथ पर आसीन प्रदर्शित किया जाये, उनके रथ में एक ही चक्र हो एवं सारथी अरुण भी हो। सूर्य मुकुट, हार, यज्ञोपवीत, कुण्डल, तथा अन्य आभूषणों से विभूषित हों। उनके दाहिनी तरफ उषा एवं बायीं तरफ प्रत्युषा देवियाँ खड़ी हों।[21]

स्थानक मुद्रा में सूर्य प्रतिमा में दंडी, पिंगल, उषा, प्रत्युषा, सारथी अरुण, सात घोड़ों का रथ और उदीच्य वेश में सूर्य के हाथ में कमलपुष्प प्रदर्शित किया गया है। कुछ प्रतिमाओं में सूर्य की पत्नियों राज्ञी, विक्षुभा, छाया और सुवर्चसा को भी दिखाया गया है।

इस प्रकार विवेच्य प्रतिमा उपरोक्त विवरणित शास्त्रीय ग्रंथों के निकट है।

भारत में अनेक स्थलों में सूर्य की स्थानक रूप की प्रतिमा प्राप्त हुई है। जिनमें बिहार, बंगाल, उड़ीसा, मध्य प्रदेश इत्यादि जगहों से बहुतायत संख्या में प्राप्त हुई हैं। बंगाल के राजशाही जनपद के नियामतपुर[22] और कुमारपुर[23] से, उत्तर प्रदेश के बलिया जनपद के बांसडीह तहसील के देवकली नामक ग्राम[24] से एवं मथुरा जनपद से, बिहार के मुंगेर[25] और समस्त उत्तराखंड इत्यादि से भी अनेक इस तरह की सूर्य की स्थानक स्वरुप की प्रतिमाएं प्रकाश में आई हैं।

शिल्पकार के शास्त्रीय ज्ञानता की वजह से विवेच्य प्रतिमा में शिल्पकार के द्वारा विभिन्न गुणों–दोषों को देखा जा सकता है। शारीरिक पक्ष में देखा जाये तो, सूर्य के चेहरे की भाव–भंगिमा नदारत महसूस हो रही है। चेहरे का आकार–प्रकार सुन्दरता सामान्य सा ही प्रदर्शित हो रहा है। कान की बनावट निम्न है,जो किसी भी तरह से शिल्पकर के तकनीकी ज्ञान की उच्चता को प्रदर्शित कर सके। इसी तरह आभूषणीय विशेषताओं पर पक्ष डालते हैं तो, आभूषणों की सजीवता, नक्कासीपन, बारीकपन का प्रभाव है। जो शिल्पकार के शिल्पकारी को प्रदर्शित करता है। शारीरिक एवं आभूषणणीय दोनों पक्षों का शिल्पांकन अच्छी तरह किया गया है किन्तु यह शिल्पकारी, शिल्पकार की उच्च कलाकृति की श्रेणी में नही रखा जा सकता है। जिस शिलाखण्ड पर प्रतिमा उत्कीर्ण की गयी है उसमे इस चतुर्भुजी स्थानक मुद्रा के अन्य सहायको का शिल्पांकन शारीरिक एवं आभुषणीय दोनों तरह से निम्न कोटि का है, जिन्हें सिर्फ अन्दाजवश देख कर नामकरण करते है। जो शिल्पकार के अज्ञानता को प्रदर्शित करता है। इससे शिल्पकार के शिल्पकारी की अनेक कमियां उजागिर होने लगती हैं, जिसे देख और समझ कर विश्लेषणात्मक अध्यनानुसार उसके तिथिक्रम को निर्धारित किया जाता है। यह प्रतिमा तकनीकी गुणों के आधार पर 'मध्यम श्रेणी' के अंतर्गत रखा जायेगा।

देवल गाँव से प्राप्त सूर्य की यह द्वितीय प्रतिमा, प्रतिमा शास्त्रीय ग्रंथों में प्राप्त विवरणों के अनुसार सूर्य के 'मानव रूप प्रतिमा' के अंर्तगत 'स्थानक मुद्रा' की ही प्रदर्शित है।

विवेच्य सूर्य प्रतिमा (Plate–02) 35′23′07 सेमी० के गहरे काले–स्लेटी प्रस्तर से निर्मित है। इस प्रतिमा सूर्य मानव रूप में अनुचरों के साथ स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित हैं।

विवेच्य प्रतिमा (Palte–02) में प्रतिमा शास्त्रीय विशेषताओं/लक्षणों में उदीच्य वेशी सूर्य को अलंकृत वृत्ताकार आभामण्डल युक्त द्विस्तरी पीठिका पर स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। सूर्य के पृष्ठ दोनों हाथों में विकसित सनाल कमलपुष्प है, जो कमर (कटि) पर स्थित हैं एवं सनाल पद्म कंधे तक उठे हुए हैं।

विवेचित सूर्य प्रतिमा के प्रतिमा शास्त्रीय विशेषताओं/लक्षणों का अत्यंत सजीव अवलोकन होता है। जिसमे सूर्य को चौड़ा किरीट–मुकुट, गले में हार, एकावली(ग्रैवेयक), कौस्तुभमणी, कानो में कुण्डल, छाती पर कवच, दो वनमाला – जिनमे एक माला जंघा भाग तक और दूसरी माला पैरों तक लटक रही है, कमर में धोती एवं मेखला/कमरबन्ध या एक पट्टी भी बंधी हुई है, पैरों में लम्बा उपानह (बूट) धारण किये हुए प्रदर्शित है।

जिस शिलाखण्ड पर प्रतिमा उत्कीर्ण किया गया है व शिलाखण्ड पट्टीदार दृ अंतर्पत्र द्वारा बहरी दोनों पार्श्वों में अलंकृत है। पीठिका पर आसीन सूर्य प्रतिमा के शीर्ष भाग (उर्ध्वपार्श्व) पर दोनों तरफ दो मालाधारी विद्याधर अपने–अपने हाथों में माला धारण किये उड़ान भरने की अवस्था में प्रदर्शित हो रहे है। प्रतिमा के मध्यवर्ती भाग (उभयपार्श्व) में गज–शार्दुल तथा सिंहव्याल का अंकन भी है। प्रतिमा के निचले भाग (अधोभाग) के दक्षिण पार्श्व में पिंगल एवं वाम पार्श्व में दण्डधारी दंडी का प्रदर्शन है।

शिल्पकार के शास्त्रीय ज्ञानता की वजह से विवेच्य प्रतिमा में शिल्पकार के द्वारा विभिन्न गुणों–दोषों को देखा जा सकता है। शारीरिक पक्ष में देखा जाये तो, सूर्य के चेहरे की भाव–भंगिमा कोमलतापूर्ण महसूस हो रही हैं। चेहरे का आकार–प्रकार सुन्दरता एवं सभ्यतापूर्ण सामान्य सा ही प्रदर्शित हो रहा है। कान की बनावट निम्न है। जो किसी भी तरह से शिल्पकर के तकनीकी ज्ञान की उच्चता को प्रदर्शित कर सके। इसी तरह आभूषणीय विशेषताओं पर पक्ष डालते हैं तो, आभूषणों की सजीवता, नक्कासीपन, बरीकपन का प्रभाव है। जो शिल्पकार के शिल्पकारी को प्रदर्शित करता है। शारीरिक एवं आभूषणणीय दोनों पक्षों का शिल्पांकन अच्छी तरह किया गया है किन्तु यह शिल्पकारी, शिल्पकार की उच्च कलाकृति की श्रेणी में नही रखा जा सकता है। जिस शिलाखण्ड पर प्रतिमा उत्कीर्ण की गयी है उसमे इस द्विभुजी स्थानक मुद्रा के अन्य सहायको का शिल्पांकन शारीरिक एवं आभुषणीय दोनों तरह से निम्न कोटि का है, जिन्हें सिर्फ अन्दाजवश देख कर नामकरण करते है। जो शिल्पकार के अज्ञानता को प्रदर्शित करता है। इससे शिल्पकार के शिल्पकारी की अनेक कमियां उजागिर होने लगती हैं, साधारणतः देखकर ही समझा जा सकता है। जिसे देख और समझ कर तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्यनानुसार उसके तिथिक्रम को निर्धारित किया जाता है। यह प्रतिमा तकनीकी गुणों के आधार पर 'मध्यम श्रेणी' के अंतर्गत रखा जायेगा।

इस तरह देवल से प्राप्त दोनों स्थानक सूर्य प्रतिमा का प्रतिमा शास्त्रीय लक्षणों एवं तुलनात्मक अध्यायानुसार तिथिक्रम 11वीं शताब्दी में निर्मित माना जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. श्रीवास्तव,वी०सी०, सन वर्शिप इन एंसियेंट इंडिया, पृ० 23–30.
2. कीथ,ए०बी०, दि रिलिजन एंड फिलासफी ऑफ दि वेदाज एंड उपनिषद, वा० –2, पृ०–12.
3. ऋग्वेद, 9:114, 3;10, 70, 8
4. ऐतरेय ब्राह्मण, 17.10.8 ; तैतरीय संहिता, 1,1,9,1;3,5,7,2
5. तैतरीय संहिता, 2,12,1,3,3,2;4,4,3
6. छान्दोग्य उपनिषद, 1,5,22,9,1–8
7. आश्वलायन गृह्यसूत्र, 1,9,7;3,7,4–6 ; सांख्यायनगृह्यसूत्र, 3,8,5;6,6,4 ; गोभिलगृह्यसूत्र, 4,6,12
8. आपस्तम्भधर्मसूत्र, 1,1,9,23 ; गौतमधर्मसूत्र, 1,50;5,32
9. श्रीवास्तव,बृजभूषण, 2010 प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञानं एवं मूर्ति कला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पंचम संस्करण, चित्र–20.

10. भट्टशाली,एन०के०, आईक्नोग्राफी ऑफ बुद्धिस्ट एंड ब्रह्मनिकल स्कल्पचर्स इन दि डच म्यूजियम, पृ०–161, प्लेट– LVIII.

11. चंद्रा,आर०पी०, मिडिवल इंडियन स्क्ल्पचर इन ब्रिटिश म्यूजियम, पृ० 67, प्लेट–20.

12. गांगुली,एम० हैण्डबुक टू दि स्कल्पचर इन दि म्यूजियम ऑफ दि बंगीया साहित्य परिषद, पृ० 74–77, प्लेट–17.

13. बैनर्जी,जे०एन०, दि डेवलपमेंट ऑफ हिन्दू आईक्नोग्राफी, पृ० 439.

14. भविष्य पुराण, अ० 124, 130.

15. वृहत्संहिता, 58, 46–48.

16. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अ० 67, 2–3, 4–8, 8–11.

17. मत्स्य पुराण, 261, 1–8 ; अग्रवाल,वी०एस०, ; मत्स्य पुराण : ए स्टडी, पृ०–361.

18. अग्नि पुराण, 51, 1–3.

19. विश्वकर्मा शिल्प, उद्धृत एन०एन०,बसु, आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ मयूरभंज, सी, एलिमेन्ट ऑफ हिन्दू आईक्नोग्राफी,वा०–1, पार्ट–2, पृ०–302 य अवस्थी,आर०ए०, खजुराहों की देव प्रतिमाएं, पृ०–166 य श्रीवास्तव,वी० सी०, सन वर्शिप इन एनसिएंट इंडिया, पृ०–307.

20. भविष्य पुराण, 124, 13–39

21. एलिमेन्ट ऑफ हिन्दू आईक्नोग्राफी,वा०–1, पार्ट–2, पृ०–306.

22. सरस्वती,एस०के०, अर्ली स्क्ल्पचर ऑफ बंगाल, पृ० 12, अग्रवाल,वी०,एस०, गुप्ताआर्ट,पृ०10

23. श्रीवास्तव,बृजभूषण, 2010 प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञानं एवं मूर्ति कला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पंचम संस्करण, चित्र–19–20.

24. बैनर्जी,जे०एन०, दि डेवलपमेंट ऑफ हिन्दू आईक्नोग्राफी, पृ० 436.

25. सिंह,वी०पी०, भारतीय कला को बिहार की देन, पृ० 132, चित्र–106.